वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहिगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सुनिश्चित राजमार्ग अपनाएँ

जीवन साधना और आत्म-रूपांतरण का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

NotebookLM

बिना पुरुषार्थ के सिद्धि की चाह

इन्द्र जैसा वर्चस्व और कुबेर जैसा वैभव

झाड़-झंखाड़ों में उलझाव / भटकाव

सुनिश्चित राजमार्ग

नौ सूत्रीय उत्कृष्टता

जीवन मुक्ति और सफलता

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

बिना बोये और सीं सींचे, केवल अनुनय-विनय से फसल नहीं काटी जा सकती।
साधना से सिद्धि का नियम विज्ञान पर आधारित है, चमत्कारों पर नहीं।

NotebookLM

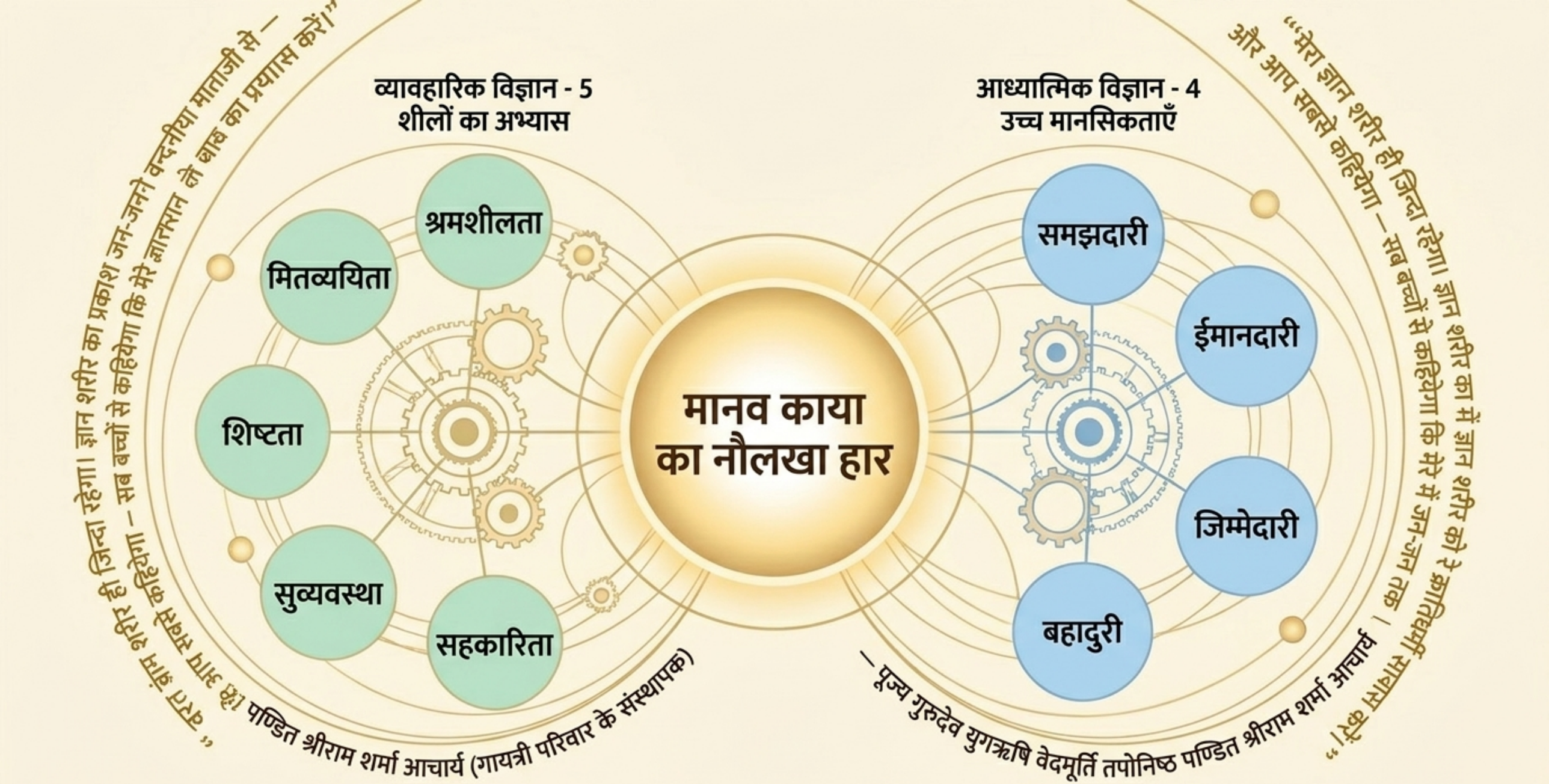

इन नौ गुणों का समावेश ही सच्चा यज्ञोपवीत धारण करना है।

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।' — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

श्रमशीलता
आलस्य और हरामखोरी का अंत

+

मितव्ययिता
अपव्यय और आडम्बर से बचाव

→

असीमित ऊर्जा और आर्थिक प्रगति

यह प्राचीन काल के तप-साधना के समतुल्य है।
शक्ति का उत्पादक नियोजन ही सफलता का प्रथम विज्ञान है।

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’ — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

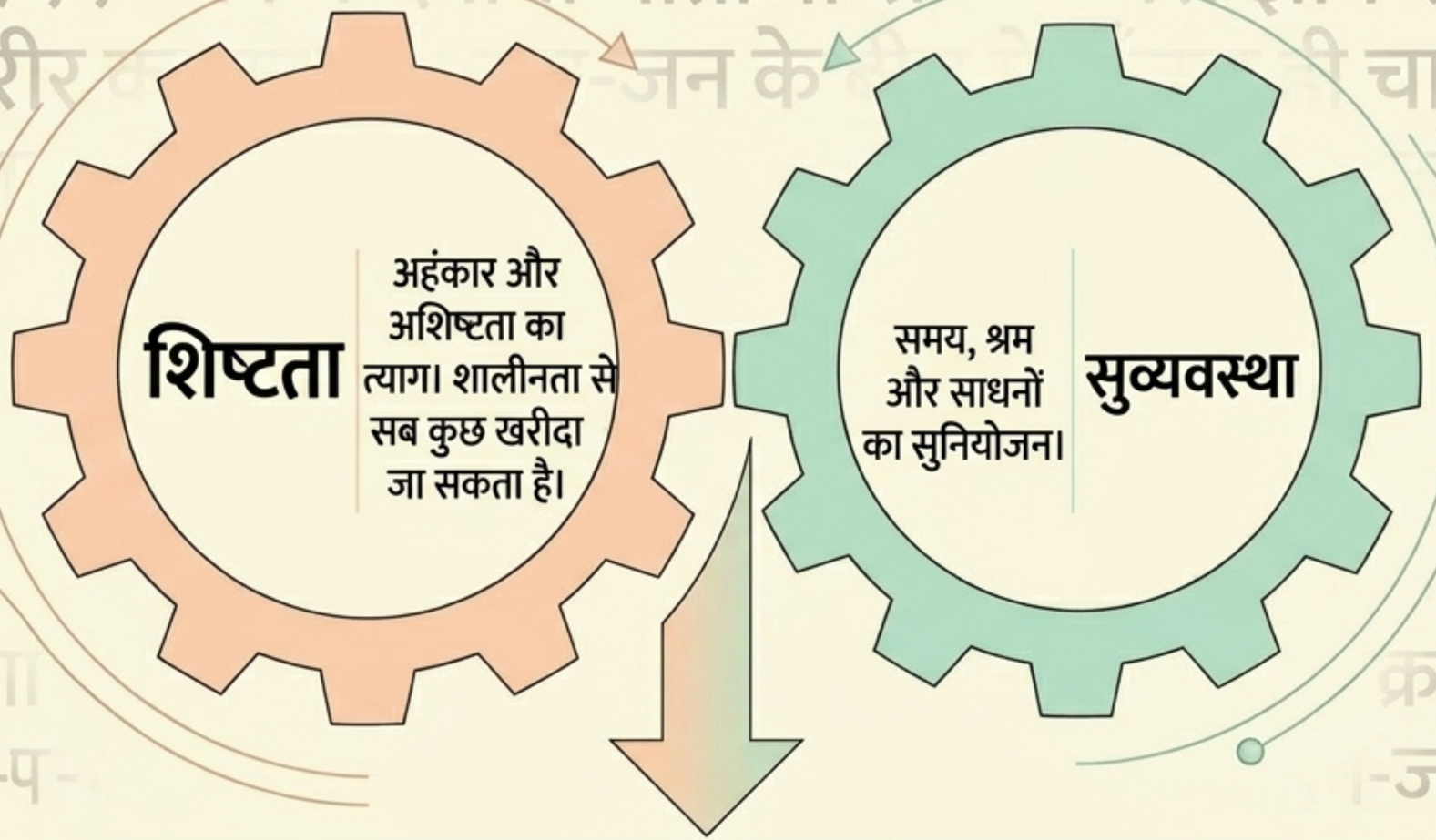

समाज में लौह-चुम्बक सा आकर्षण और उत्कृष्ट लोक व्यवहार

NotebookLM

संकीर्ण स्वार्थपरता का त्याग

सहकारिता

संघ शक्ति - देव शक्तियों के संयोग से दुर्गा का प्रादुर्भाव

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।" — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

समझदारी

तात्कालिक आकर्षण पर अंकुश

समझदारी से इन्द्रिय संयम आता है,
जो ईमानदारी को सुरक्षित रखता है।
झूठ की हाँड़ी एक बार ही चढ़ती है।

ईमानदारी

प्रामाणिकता और विश्वसनीतता

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे ध्यान करें।"
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्तिनिर्भ (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

समझदारी
तात्कालिक आकर्षण पर अंकुश

समझदारी से इन्द्रिय संयम आता है,
जो ईमानदारी को सुरक्षित रखता है।
झूठ की हाँड़ी एक बार ही चढ़ती है।

ईमानदारी
प्रामाणिकता और विश्वसनीतता

जिम्मेदारी
परिवार और समाज के प्रति कर्तव्य निष्ठा

बहादुरी
अनीति के आगे सिर
न झुकाना

कायरता आततायियों को आमंत्रित करती है। बहादुरी के बिना कोई भी सद्गुण सुरक्षित नहीं है।

NotebookLM

**यह ९ सूत्रीय राजमार्ग ही सच्चा कायाकल्प है,
जो नवयौवन और असीमित ऊर्जा प्रदान करता है।**

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।’”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

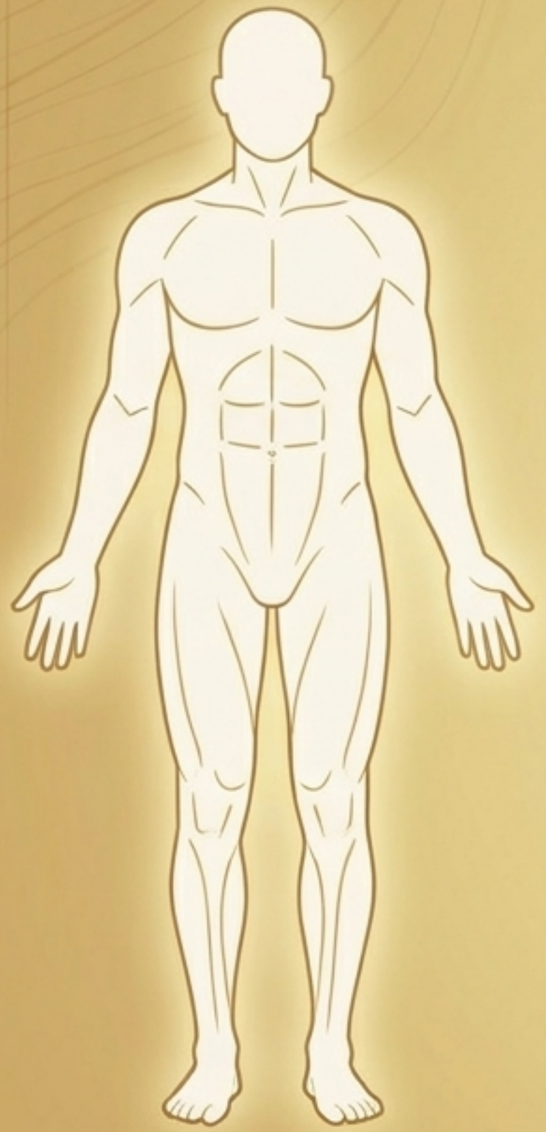

आकृति (बाहरी रूप)	प्रकृति (आंतरिक स्वभाव)
अपरिवर्तित	पूर्ण रूपान्तरण
भौतिक शरीर और बाहरी रूप-रंग वैसा ही रहता है।	पशुता से देवत्व की ओर विकास।

द्विजत्व (दूसरा जन्म) कोई कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि इसी काया में देवत्व के दर्शन करने की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहिवेगा — सब बच्चों से कहिवेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।" — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

व्यायाम किये बिना कोई पहलवान नहीं बनता।

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

"मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।""

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

ईश्वर की कोई रूप-आकृति नहीं। भाव-श्रद्धा के बिना कर्मकाण्ड केवल बाल-क्रीड़ा है।

NotebookLM

युग परिवर्तन का गणित: १ से ५, ५ से २५

महाकाल के आमंत्रण को स्वीकारें।
जीवित रहते हुए 'जीवन मुक्ति' का रसास्वादन करें।
विवेक-विस्तार के इस राजमार्ग पर स्वयं चलें
और अन्यों को भी प्रेरित करें।

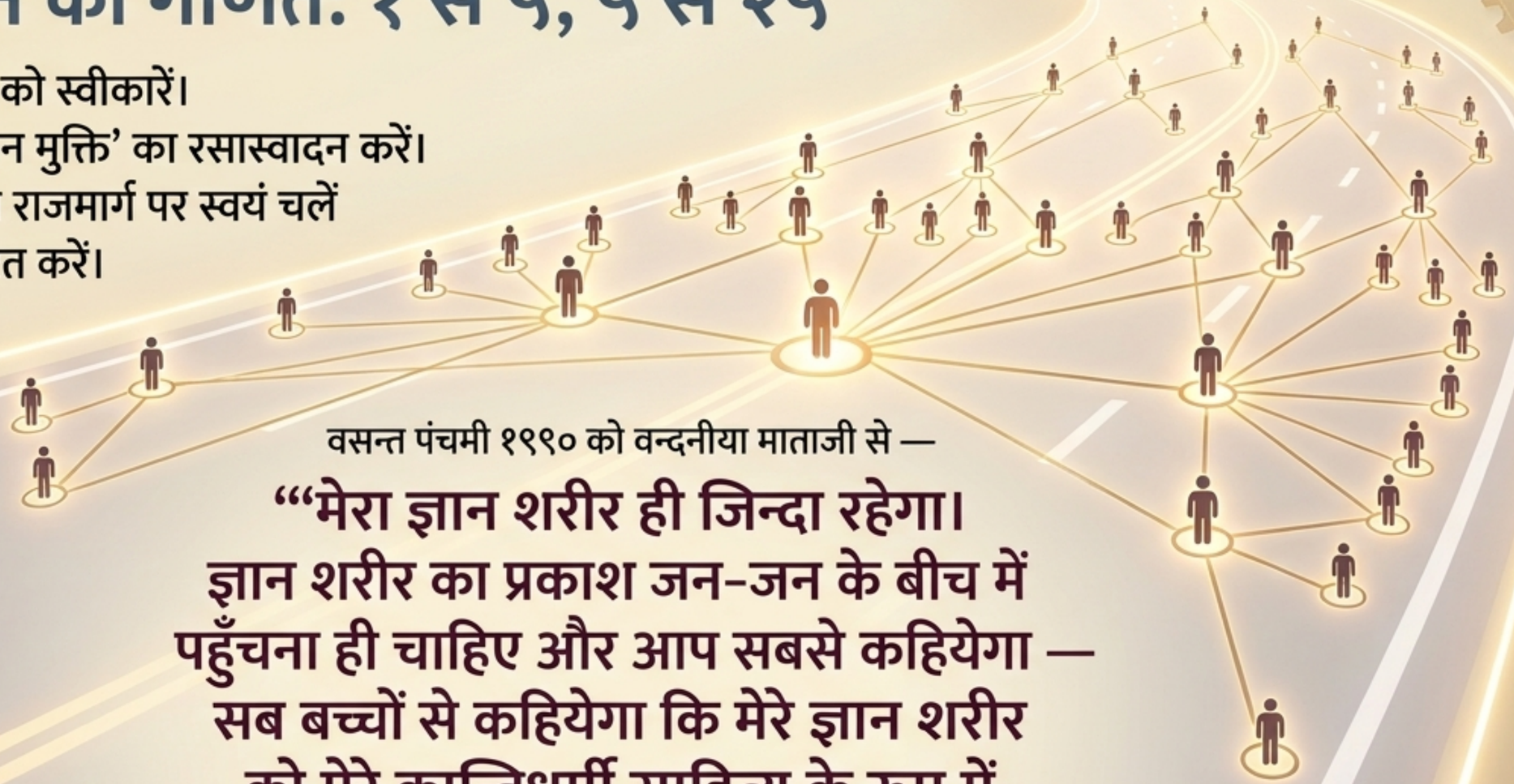

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

**"मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"**

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM